International Journal of Applied Research 2015; 1(10): 167-168

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(10): 167-168
www.allresearchjournal.com
Received: 16-07-2015
Accepted: 18-08-2015

कादम्बिनी मिश्रा
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

Correspondence
कादम्बिनी मिश्रा
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

मध्यकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में संत भक्त कवि

कादम्बिनी मिश्रा

वेद पुराण, शास्त्र स्मृतियाँ आदि भारतीय अतीत के उत्कृष्ट और सांस्कृतिक जीवन के साक्षी हैं। सामाजिक जीवन को व्यवस्थित और सांस्कृतिक जीवन को विकसित करने में इन शास्त्र पुराणों का इतिहास में अतुलनीय योगदान है। समाज एक अज्ञात शक्ति से संचालित होता है जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति व्यवहार करता हैं। समाज की शक्ति का मूल निश्चय ही धर्म में है जो आदिकाल से समाज को संचालित करता आ रहा है। "धर्म के आधार पर व्यक्ति और समाज दोनों को बल प्राप्त होता है।"[1] किन्तु धर्म जब जड़ बन जाए, रुढिवाद एवं अंधविश्वासों की जकड़न में बंध जाय तो व समाज का हित करने के बजाय, उसे विनाश की ओर ले जाता है। भारत के मध्यकालीन समाज की स्थिति कुछ इसी प्रकार की हो गयी थी। समाज का विचार प्रवाह रुक गया था। सामंती शक्ति का सर्वत्र बोलबाला था। सभी राज्य एक दूसरे पर अपना वर्चस्व कायम करने के लिए युद्धरत रहते थे। आम जनता सुकून की सांस के लिए तरस गई थी। इन्हीं कारणों से भारतीय इतिहास में कुछ शताब्दियों को अंधकार युग संबोधित किया गया है। कांशी प्रसाद जायसवाल की पुस्तक का नाम है– 'भारत वर्ष का अंधकार युगीन इतिहास' इसमें सन् 1050 से 1250 ई0 तक की दो शताब्दियों को उन्होंने अंधकार युग कहा है। इसी प्रकार रोमिला थापर आठवीं से तेरहवीं शताब्दी तक के काल से तेंरहवीं शताब्दी तक के काल को अंधकार काल कहकर प्रतिवाद स्वरुप स्वंय कहती हैं – "आठवीं से तेरहवीं शताब्दी तक के काल को कभी–कभी 'अंधकार–युग कहा जाता है जब हिन्दुओं की उच्च संस्कृति का ह्रास हुआ और राजनीतिक विश्रृंखलता के फलस्वरुप एक विदेशी शक्ति को इस उपमहाद्वीप में विजय प्राप्त करने में सुविधा हुई। परंतु 'अंधकारयुग' न होकर निर्माणात्मक युग था जिसका विस्तृत अध्ययन लाभप्रद हो सकता है, क्योंकि आज के भारत की अनेक संस्थाएं इसी युग में स्थायी रुप ग्रहण करने लगी थी।"[2]

भक्ति आंदोलन का संबंध किसी अंधकार युग से है या नहीं इससे अधिक महत्पपूर्ण यह जानने में है कि किस प्रकार इस आंदोलन ने भारतीय जन जीवन से जुड़कर इसे उसके सांस्कृतिक धरोहर से अवगत कराया। इसे किस प्रकार भारतीय जनजागरण के रुप में पहचाना जा सकता है। किस प्रकार हमारे संत भक्त कवियों ने आध्यात्मिकता की शक्ति को भक्ति की शक्ति में परिवर्तित कर भारतीय संस्कृति में जीवनी शक्ति का संचार किया।

डॉ0 रामविलास शर्मा ने भक्ति साहित्य को सामंत विरोधी माना है। आधुनिक भाषाओं से संबंध होने के कारण भक्ति की पहुंच जनजीवन तक थी। वह किसानों, कारीगरों एवं उनसे संबद्ध कवियों का साहित्य है। मुसलमानों के आक्रमण के पहले ही भक्ति साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि आचार्यों ने प्रस्तुत कर दी और इन्हीं आचार्यों की प्रेरणा के फलस्वरुप भक्त कवियों ने, संत कवियों ने, सूफी कवियों ने अपनी–अपनी भाषाओं में विपुल साहित्य रचकर जनजीवन में आध्यात्मिक ज्योति जगाई। भक्त एवं संत कवियों पर नाथ संदाय के आंदोलन का प्रभाव स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इस संबंध में लिखते हैं – "भारतीय धर्म साधना के इतिहास में इस (नाथ) सम्प्रदाय का बड़ुत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भक्ति आंदोलन के पूर्व यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण धार्मिक आंदोलन रहा है और बाद में भी पर्याप्त शक्तिशाली रहा है, आधुनिक भारतीय भाषाओं में से प्रायः सबके साहित्यक प्रयत्नों की पृष्ठभूमि में इसका प्रभाव सक्रिय रहा है, आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य की प्रेरक शक्तियों का अध्ययन इस सम्प्रदाय के अध्ययन के बिना अधूरा रह जाएगा।"[3] किसी देश की संस्कृति में निरंतरता यदि वर्तमान में भी रहती है और वह मिटती नहीं है तो उसे पहचानने की आवश्यकता है। उसके रुप भले ही बदल जाए किंतु उसमें निहित अमूर्त भावना उस निरंतरता को जीवित रखती है। भारत का अतीत यदि वर्तमान में सनातन रुप में समकाली बना हुआ है तो उसे भारतीय संस्कृति का प्रधान लक्षण मानना चाहिए। उस अमूर्त शक्ति की पहचान करायी शंकराचार्य, वल्लभाचार्य, रामानुजाचार्य, माध्वाचार्य एवं निंबार्क आदि आचार्यों द्वारा संत भक्त कवियों ने।

इस्लाम के आगमन के पूर्व ही इस्लामवत सम्प्रदाय का वर्चस्व फैलने लगा था। 'प्रबोध चंद्रोदय' नाटक में जैन और बौद्ध श्रमणों का जो रुप अंकित किया गया है। वह अत्यंत घृणा उपजाने वाला है। "नाटककार ने यहां किसी को छोड़ा नहीं है। जैन और बौद्ध भिक्षुओं तथा पाशुपत कापलिकों के द्वारा धर्म और नैतिकता की जो दुर्दशा उन दिनों हो रही उसका पूरा चित्र इस नाटक में आ गया है। अतिशयोक्ति को बाद दे तब भी यह वर्णन तत्कालीन समाज पर यथेष्ट प्रकाश डालता है।"[4] समाज की इस दुर्दशा में इस्लाम के आगमन ने जलती अग्नि में घृत का कार्य किया।

भारतीय संस्कृति की सनातनता की खोज के क्रम में भक्ति आंदोलन कई बार व्याख्यायित हुआ है। और इस क्रम से जोड़ा गया है किंतु अब हमारा सामना यूरोपीय संस्कृति से हो चुका है। इन दोनों संस्कृतियों के संबंध में 'निर्मल वर्मा' ने अपनी पुस्तक 'भारत एवं यूरोप : प्रतिश्रुति के क्षेत्र' में लिखा है – "अतीत और वर्तमान के बीच इतनी बड़ी सांस्कृतिक फांक भारतीय मानस में पहले कभी नहीं आई थी बेहद असहिष्णु मुसलमानों के शासन काल में भी नहीं। हिन्दुओं को बलपूर्वक इस्लाम धर्म स्वीकार कराया जा सकता था लेकिन जिन्होंने इससे इनकार किया उन्हें कम–से–कम इतनी सुरक्षित जगह अवश्य मिली जिसमें उनका अतीत उनके वर्तमान में सांस ले सके और जहां उनका वर्तमान अतीन के मिथकों और प्रतीकों के सहारे अपने को सुरक्षित रख सके। यह वह अतीत नहीं था जिसे पश्चिमी प्राच्यवेत्ताओं ने खोजा था जिसे संग्रहालयों में प्रदर्शित किया जा सके – इस अतीत को खोदकर इसलिये नहीं निकाला जा सकता क्योंकि इसे कभी दफनाया ही नहीं गया था। भारत का अतीत सनातन रुप से समकालीन था, उसी तरह जैसे अतीत के विश्वासों और संस्कारों में वर्तमान सनातन रुप से अनुबंधित था अपने धर्म में स्थित जो अनादि अनंत है।"[5]

निर्मल वर्मा कहते हैं ब्रिटिशों के आगमन से भारत के अतीत एवं वर्तमान के बीच इतनी बड़ी सांस्कृतिक फांक–अंतर पहले कभी नहीं आई। "यह क्रूर विडंबना ही हे कि यूरोप ने जिस भारत के अतीत को खोजने का दावा प्रस्तुत किया, उसी के वर्तमान को नष्ट करने की जिम्मेदारी भी अदा की।"[6]

हमारे देश में आध्यात्मिक भावना प्रबल रुप में सदैव विद्यमान है। क्यों विद्यमान है इसके कारणों की खोज में भक्ति आंदोलन एवं संत भक्त कवियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक अवमूल्यन के इस युग में सांस्कृतिक महत्व के इस आंदोलन की भूमिका को पुनः समझने की आवश्यकता है। भक्ति आंदोलन का संबंध देश की सामान्य जनता से है। जिसमें सभी वर्ग की जनता आती है। भक्तों ने अपनी–अपनी भाषाओं में गीत गाए, पद लिखे, कविता लिखी और उस परम सत्ता के प्रति अपनी भक्ति व्यक्त की। जाति–पाति के भेद को दूर कर हरि भजन को महत्व दिया। जाति–पाति पूछे नहि कोई। हरि को भजे सो हरि का होई, राम का नाम राम से अधिक बलवान बतलाकर निर्गुण–सगुन के भेद की खाई को पाटने की कोशिश की गई। तुलसीदास ने पतनोन्मुख समाज को राम नाम का संबल दिया एवं मर्यादापुरुषोत्तम के रुप में आदर्श मर्यादा की स्थापना की जो नैतिकता से परिपूर्ण थी। कबीरदास ने धर्म के पाखंड पर प्रहार किया तो सूरदास ने वाममार्गी साधन में प्रयुक्त नारी का पतितावस्था से उद्धार कर उसकी वात्सल्यमयी छवि का निर्माण किया।

इन सबके क्रम में भक्त कवियों ने जो बसे बड़ी क्रांति की वह भी भाषागत क्रांति। संस्कृत भाषा सबको नहीं आती थी। अतएव देवभाषा में अतीत का जो ज्ञान सुरक्षित चला आ रहा थ, उसको तद्युगीन आवश्यकता के अनुरुप सर्वसुलभ एवं सबकी पहुंच के भीतर पहुँचाने का काम भक्त कवियों ने किया।

भारत में जब–जब अंधकार युग आए हैं तब–तब अतीत से प्रेरणा लेकर नई चेतना का आगमन हुआ है। "अतीत की ओर मुड़ते हुए भक्त कवियों ने जो कुछ अपनी–अपनी भाषाओं में लिखा उसे भारतीय संस्कृति का अंग मानकर ही नव जागरण कालीन विचारकों (विवेकानंद, परमहंस, अरविंद, राजाराम आदि) ने अपने विचारों को गरिमा प्रदान की।"[7]

मध्यकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में समाज को नई दिशा देने में संत कवियों एवं भक्त कवियों की महती भूमिका थी किंतु आज भी उनका महत्व किसी भी रुप में क्षीण नहीं हुआ है। भक्त कवियों की रचनाएं आज हमारे लिए क्लासिकल रचनाएं हो गई हैं। हमारी भाषाएं इन कवियों के कारण प्राणवान हुयी। 'भक्ति' जैसे दिव्य भाव का प्रवाह भक्तिकाल से लेकर आज तक प्रवाहित है जो भारतीय संस्कृति की जीवनी शक्ति है। इसलिये भक्ति साहित्य आज भी प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची

1. राजकमल बोरा, भारतीय भक्ति साहित्य, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2009, पृ.सं.–10
2. रोमिला थापर, भारत का इतिहास (1000 ई.पू. से 1526 तक), राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण, 1983 ई., पृ.सं.–200
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी, नेवेद्य निकेतन 5, वाराणसी, द्वितीय संस्करण (निवेदन से)
4. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, लोक भारतीय प्रकाशन, तीसरा संस्करण, पृ.सं.–192
5. निर्मल वर्मा, भारत और यूरोपः प्रतिश्रुति के क्षेत्र, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1991, पृ.सं.–34–35
6. वही पृ.सं.–34
7. राजकमल बोरा, भारतीय भक्ति साहित्य, वाणी प्रकाशन,, संस्करण 2009 पृ.सं.–92